16

कलीसिया जिसने जो कुछ उसके पास था उससे जो कुछ कर सकती थी, किया

(3:7–13)

यीशु ने सबसे अच्छी और सबसे खराब कलीसियाओं को रहने के लिए छोड़ दिया। इस प्रस्तुति में, हम सबसे अच्छी कलीसिया अर्थात फिलाडेल्फिया की कलीसिया पर अध्ययन करेंगे।

फिलाडेल्फिया सरदीस के दक्षिण–दक्षिण पूर्व में था।[1] यह तटीय नगरों की तरह बड़ा, समृद्ध और प्रसिद्ध नहीं था, परन्तु इसमें फिर भी कई यादगार बातें हुईं। इसका नाम इस के बसाने वाले, परगुमम के राजा, अतलुस द्वितीय फिलाडेल्फस के नाम पर रखा गया था। ''फिलाडेल्फस'' ''प्रेम'' (*philia*) के साथ ''भाई'' (*adelphos*) शब्द का मेल था; जिसका अर्थ ''भाई का प्रेम'' या ''भाइचारे का प्रेम'' है।[2] यह नाम अतलुस को अपने बड़े भाई यूमिनस के प्रति उसकी वफ़ादारी के कारण दिया गया था।

मूसिया, लुदिया और फ्रुगिया को जाने वाले व्यापारिक मार्गों पर स्थित, फ्रुगिया को ''पूर्व को जाने का मार्ग'' कहा जाता था। इसे लुदिया और फ्रुगिया में यूनानी भाषा तथा यूनानी संस्कृति फैलाने के लिए एक मिशनरी नगर के रूप में अतलुस ने बसाया था। यह नगर बड़ा नहीं था, पर यह एक उपजाऊ क्षेत्र था और दाखरस की उपज के कारण प्रसिद्ध था। इसके मन्दिरों तथा सार्वजनिक भवनों की संख्या तथा भव्यता के कारण कई बार इसे ''छोटा अथेने'' भी कहा जाता था।

नगर की भूवैज्ञानिक विशेषता पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है: यह दोष रेखा पर बना था और इसमें कुछ अधिक ही भूकम्प आते थे।[3]

> क्षेत्र के अन्य नगरों [सरदीस सहित] के साथ ... फिलाडेल्फिया 17 ईस्वी में आए एक भयंकर भूकम्प में नष्ट हो गया था, ... कई वर्षों तक क्षेत्र में छाए आतंक से लोग भयभीत होते रहे थे और इस भय के कारण अधिकतर लोग नगर के बाहरी क्षेत्र में झोंपड़ियों में रहते थे।[4]

प्रभु की दृष्टि में नगर की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उसके लोगों की एक मण्डली वहां इकट्ठी होती थी–वह कलीसिया, जिसकी कालांतर में बड़ी बुरी तरह से परीक्षा हुई थी और भविष्य में उसे और भी कठिन समय का सामना करना पड़ना था।[5] यीशु का पत्र, जिसमें कोई डांट नहीं है, इस छोटे समूह को शांति देने के लिए लिखा गया, जो उसके लिए बहुमूल्य था।

उसके कारण शांति (3:7)

यीशु ने पहले तो मण्डली के लोगों को अपनी पहचान बताते हुए शांति दी: ''और फिलेदिलफिया की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि, जो पवित्र और सत्य है, और जो दाऊद की कुंजी रखता है, जिस के खोले हुए को[6] कोई बन्द नहीं कर सकता और बन्द किए हुए को कोई खोल नहीं सकता, वह यह कहता है'' (आयत 7)। (दीव टों के बीच चलते हुए यीशु का दर्शन का चित्र देख।)

सताने वालों को सामने लाया जाना था

यीशु ने अपना परिचय ''पवित्र और सत्य'' के रूप में कराया। यूनानी शब्द का अनुवाद ''पवित्र'' शब्दों का अर्थ ''पवित्र [जन]'' है; मूल शब्द परमेश्वर के लिए सुरक्षित था (यशायाह 40:25; हबक्कूक 3:3; प्रकाशितवाक्य 6:10)। इस प्रकार यीशु ने अपने परमेश्वर होने की पुष्टि की, परन्तु उसने इससे भी बढ़कर किया। पवित्रता का परमेश्वर होने के कारण, वह पाप को सहन नहीं कर सकता और न ही करेगा। यह विवरण इस बात की गारंटी था कि दुष्ट लोगों को, विशेषकर उन्हें जो मसीही लोगों को सताते थे, दण्ड दिया जाएगा।

फिर, उसने अपने आपको ''जो सत्य है'' के रूप में बताया (मूलत: ''सच्चा'')। फिलाडेल्फिया झूठे देवताओं और नकली यहूदियों से भरा पड़ा था (3:9), परन्तु यीशु सच्चा और भरोसे के योग्य था।

क्या ऐसी विशेषताएं सताए जा रहे मसीहियों को शांति देने के लिए थीं? अध्याय 6 में प्रभु से बात करते हुए शहीदों ने, उसे ''हे पवित्र और सत्य'' कहा (6:10): क्योंकि वह पवित्र है, उन्हें मालूम था कि वह पाप का न्याय करेगा। वह सच्चा है, इस कारण उन्हें मालूम था कि वह अपने लोगों को निर्दोष ठहराएगा।

शक्ति का इस्तेमाल होगा

यीशु ने कहा कि उसके पास ''दाऊद की कुंजी'' है (देखें यशायाह 22:15–25)।[7] ''कुंजी'' होना अधिकार का,[8] विशेषकर प्रवेश दिलाने या प्रवेश दिलाने से इनकार करने के अधिकार का संकेत है।[9] यह बात कि यीशु के पास *दाऊद की* कुंजी थी, इस बात का सबूत था कि वह दाऊद की वंशावली से आया मसीहा था (2 शमूएल 7:16) और अब वह दाऊद के सिंहासन पर राज कर रहा था (प्रेरितों 2:30–36)।

केवल यीशु के पास ही उस कुंजी को रखने का अधिकार था। इसलिए जो कुछ उसने खोला, उसमें से कुछ भी बन्द नहीं हो पाया; और जो कुछ उसने बन्द किया उसमें से कुछ भी खोला नहीं जा सकता था। फिलाडेल्फिया के मसीही लोगों को उसने बताया कि उसने उनके सामने ‘‘एक द्वार खोल रखा है, जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता'' (3:8ख)। शैतान की शक्तियां अस्थाई रूप से अपनी कलीसिया के लिए प्रभु की योजना को धकेल सकती हैं, परन्तु अन्त में, परमेश्वर के उद्देश्य पूरे हो जाएंगे।

उसकी महिमा के कारण सांत्वना (3:8-10क)

प्रशंसा पाना सबको अच्छा लगता है और यीशु ने इस विश्वासी कलीसिया की प्रशंसा की:

> मैं तेरे कामों को जानता हूं, (देख, मैं ने तेरे सामहने एक द्वार खोल रखा है, जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता) कि तेरी सामर्थ थोड़ी सी है, और तू ने मेरे वचन का पालन किया है और मेरे नाम का इनकार नहीं किया। देख, मैं शैतान के उन सभावालों को तेरे वश में कर दूंगा, जो यहूदी बन बैठे हैं, पर हैं नहीं, वरन झूठ बोलते हैं- देख, मैं ऐसा करूंगा, कि वे आकर तेरे चरणों में दण्डवत करेंगे, और यह जान लेंगे, कि मैं ने तुझ से प्रेम रखा है। तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है,[10] इसलिए मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूंगा (आयतें 8-10क)।

छोटा परन्तु उपजाऊ

यीशु ने मण्डली की ‘‘थोड़ी सामर्थ'' की बात की। यीशु उनके सदस्यों की, गुणों की कमी, या वित्तीय संशाधनों की कमी की बात कर रहा हो सकता है। वह उस ढंग की ओर संकेत कर रहा हो सकता है, जिससे मण्डली के कुछ सदस्यों की सामाजिक स्थिति के कारण समाज के लोग उसे नीचा देखते हैं (देखें 1 कुरिन्थियों 1:26)।

यीशु ने उनकी ‘‘थोड़ी सामर्थ'' की बात उन्हें परेशान करने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें शाबाशी देने के लिए की। इस बात के बावजूद कि उनमें ‘‘थोड़ी सामर्थ'' थी, उन्होंने उसे कुछ न करने के बहाने के लिए इस्तेमाल नहीं किया, बल्कि उन्होंने जो कुछ उनके पास था, उससे जो कुछ कर सकते थे, किया। एल्फ्रेड प्लमर के अनुसार, आयत के इस भाग का दबाव यह है कि ‘‘*क्योंकि* तुझ में थोड़ी सामर्थ है, और उस थोड़ी का अच्छा इस्तेमाल किया है, मैंने तुम्हें एक अवसर दिया है जिसे तुम से कोई छीन नहीं सकेगा।''[11]

परमेश्वर हम से कभी हमारी क्षमता से अधिक की उम्मीद नहीं करता, परन्तु वह हम से उन संसाधनों का इस्तेमाल करने की उम्मीद अवश्य करता है, जो वह हमें देता है। मैं ऐसे मसीहियों तथा मण्डलियों को जानता हूं, जिनका दर्शन है कि ‘‘हम थोड़ा कर सकते हैं, इसलिए हम कुछ नहीं करेंगे।'' दूसरी ओर फिलाडेल्फिया की कलीसिया, मरकुस 14:8क वाली उस स्त्री की तरह थी, जिसने ‘‘जो कुछ वह कर सकी, वह उसने किया।''

सताए गए परन्तु स्थिर रहे

मसीही लोग एक काम कर सकते थे और उन्होंने किया भी, वे विश्वासी बने रहे। यीशु ने कहा, ''तू ने मेरे वचन का पालन किया है और मेरे नाम का इनकार नहीं किया। ... तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है।'' पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के समय, यीशु ने अपने चेलों को बताया था, ''यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा'' (यूहन्ना 14:23क)।

''मेरे वचन का पालन किया है'' और ''मेरे नाम का इनकार नहीं किया'' वाक्यांश अनिश्चित भूतकाल में है, जो एक ही समय की घटना का संकेत देते हैं। कालांतर में, शायद अन्तिपास की मृत्यु के समय, स्पष्टतया एक विशेष समय था, जब उनका विश्वास बड़ी कठोरता से परखा गया था (2:13)। यीशु का इनकार करने और सम्राट का अंगीकार करने के दबाव के बावजूद, वे स्थिर रहे थे।

अपनी ''थोड़ी सामर्थ'' से वे यह कैसे कर सकते थे? स्पष्टतया, पौलुस की तरह उन्होंने प्रभु की सामर्थ पर निर्भर रहना सीख लिया था:

> और उस ने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है; इसलिए मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे। इस कारण मैं मसीह के लिए निर्बलताओं, ... में, प्रसन्न हूं; क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं (2 कुरिन्थियों 12:9, 10)।[12]

यदि मुझे चलकर दरार के ऊपर बने एक पुल को पार करना हो, तो मैं यह नहीं पूछूंगा कि ''क्या मेरी टांगें इस दरार से कूदने के लिए मज़बूत हैं?'' मैं तो पूछूंगा, ''क्या यह पुल इतना मज़बूत है कि मैं इस पर चलूं तो यह टूटे न?'' इसी प्रकार, जीवन की परीक्षाओं का सामना करने के समय, हमारा प्रश्न यह नहीं होना चाहिए ''क्या हम इतने मज़बूत हैं?'' बल्कि यह होना चाहिए कि ''क्या हमारा प्रभु इतना मज़बूत है?'' फिलाडेल्फिया की कलीसिया ने इस प्रश्न का ठोक-बजा कर उत्तर दिया था कि ''हां!''

उसके पूर्वप्रबन्ध के कारण शांति (3:8-10ख)

फिलाडेल्फिया के मसीही लोगों के स्थिर रहने के कारण, उनके भविष्य में अद्‌भुत बातें होने वाली थीं।

क्षमता बढ़ी

यीशु ने उन्हें विशेष अवसर देना जारी रखना था: ''देख, मैं ने तेरे सामने एक द्वार खोल रखा है, जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता''[13] (आयत 8क)। खुले द्वार का रूपक नये नियम में विशेष अवसरों के लिए, विशेषकर सुसमाचार फैलाने के अवसरों के लिए इस्तेमाल किया गया (प्रेरितों 14:27; 1 कुरिन्थियों 16:9; 2 कुरिन्थियों 2:12; कुलुस्सियों

4:3)।[14] अतलुस ने तो फिलाडेल्फिया नगर को यूनानी संस्कृति के फैलाव के लिए मिशनरी नगर के रूप में बसाया था, परन्तु परमेश्वर ने इसका इस्तेमाल एशिया माइनर के पूर्वी देशों में सुसमाचार फैलाने के मिशनरी केन्द्र के रूप में किया।

जो कुछ हम कर सकते हैं, उसे करने के लिए जो हमारे पास है, उसका इस्तेमाल करने की अद्‌भुत अलौकिक शक्ति[15] यह है कि प्रभु हमारी क्षमता को बढ़ाता है। व्यायाम करने से मांसपेशियां मज़बूत होती हैं और कठोर काम कर सकती हैं। दो तोड़े चार बन सकते हैं (मत्ती 25:17)।

निश्चय ही, कलीसिया ने अवसर का इस्तेमाल करना था। यीशु द्वार खोलकर हमें प्रवेश करने का निमन्त्रण देता है, परन्तु हमें उसमें जाने को विवश नहीं करता। फिलाडेल्फिया के लोगों को अभी भी स्थिति का लाभ उठाना है। स्पष्टतया प्रभु को इसमें कोई संदेह नहीं था कि वे अपनी नई क्षमता से जो कुछ भी कर सकते हैं, करते रहेंगे।[16]

दृढ़ता को शाबाशी मिली

फिर, यीशु ने कहा कि वे उसमें अपने विश्वास के कारण शाबाशी पाएंगे: ''देख, मैं शैतान के उन सभा वालों को तेरे वश में कर दूंगा, जो यहूदी बन बैठे हैं, पर हैं नहीं, वरन झूठ बोलते हैं–देख, मैं ऐसा करूंगा, कि वे आकर तेरे चरणों में दण्डवत करेंगे, और यह जान लेंगे, कि मैं ने तुझ से प्रेम रखा है'' (आयत 9)।

स्मुरने की कलीसिया के नाम पत्र का अध्ययन करते हुए हमें ''शैतान की सभा'' वाक्यांश से परिचित कराया गया था (2:9)। हम ने देखा था कि इस शब्द का इस्तेमाल सामान्य महासभा, मसीहा के रूप में यीशु को ठुकराने वाले यहूदियों के गुट को कहा गया था।[17] उन्हें ''शैतान की सभा'' कहा गया क्योंकि वे शैतान का काम कर रहे थे। हम ने यह भी देखा था कि स्मुरने और फिलाडेल्फिया, दो मण्डलियां, जिन्हें दण्ड नहीं मिला था, आपस में काफ़ी मिलती-जुलती थीं क्योंकि दोनों को ही यहूदियों द्वारा सताया जा रहा था।[18] सम्भवतया यहूदी लोग मसीही लोगों पर और दबाव बढ़ाने के लिए रोमी अधिकारियों को प्रोत्साहित करने के लिए राजनैतिक दबाव का इस्तेमाल कर रहे थे।

स्मुरने के नाम लिखने के समय यीशु का संकेत था कि वह मण्डली शैतान की सभा के हमलों से बच जाएगी। फिलाडेल्फिया की कलीसिया को उसकी प्रतिज्ञा इससे कहीं आगे बढ़कर थी: ''मैं ऐसा करूंगा कि वे [नकली यहूदी] आकर तेरे पैरों पर गिरेंगे,[19] और यह जान लेंगे कि मैंने तुझ से प्रेम रखा है।'' कुछ लोगों का मत है कि यह फिलाडेल्फिया में मसीही बनने वाले यहूदियों की बात है;[20] उनका विचार है कि यह मण्डली को दिए गए ''खुले द्वार'' का एक भाग था। दूसरों का सुझाव है कि यह प्रतिज्ञा पश्चात्तापहीन यहूदियों के बुड़बुड़ाते हुए आने की बात है कि मसीही लोग भी परमेश्वर के विशेष लोग हैं। इन शब्दों का अर्थ जो भी हो, बाइबल स्पष्ट बताती है कि वह दिन आएगा जब सभी अविश्वासी मान *लेंगे* कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (और इसलिए जो उसके पीछे चले थे, वे सही थे):

> क्योंकि लिखा है, कि प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे

सामने टिकेगा, ... (रोमियों 14:11)।

जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभी अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:10, 11)।

सुरक्षा का आश्वासन दिया गया

यीशु ने फिलाडेल्फिया की कलीसिया को निरन्तर सुरक्षा देते रहने का आश्वासन दिया: ''तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिए मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय से बचा रखूंगा, जो पृथ्वी पर रहने वालों के परखने के लिए सारे संसार पर आने वाला है'' (आयत 10)। उन्हें अतीत में सताया गया था, और भविष्य में और परीक्षाएं उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं, परन्तु यीशु ने उनके साथ होना था। शब्दों के उसके खेल पर ध्यान दें: क्योंकि उन्होंने उसके वचन को थामे रखा था, इसलिए उसने उन्हें बचाना था।

''परीक्षा के समय'' वाक्यांश तुरन्त भविष्य में बढ़ने वाले सताव की बात था।[21] अध्याय 6 से 19 में परीक्षा के उस भयंकर समय को बताने के लिए कई रूपकों का इस्तेमाल किया गया। ध्यान दें कि यह ''परीक्षा का समय'' केवल मसीही लोगों पर नहीं आना था, बल्कि ''पृथ्वी पर रहने वाले'' *सब* लोगों पर आना था,[22] और इसका एक उद्देश्य '' *पृथ्वी पर रहने वालों* को परखना'' था। प्रकाशितवाक्य में, पृथ्वी पर रहने वालों की अवधारणा अविश्वासियों के लिए इस्तेमाल हुई है (6:10; 8:13; 11:10; 13:8, 14; 17:8)। इस आयत से हमें पता चलता है कि जब परमेश्वर पृथ्वी पर कष्ट गिरने की अनुमति देता है, तो उसका एक उद्देश्य[23] लोगों को मन फिराव के लिए लाना होता है।[24] प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में से सीखते हुए इस बात को ध्यान में रखें कि इसमें वर्णित, खतरनाक विनाशों में परमेश्वर का उद्देश्य समझने की यह कुंजी है।

आयत 10 में यीशु के कहने का अर्थ यह है कि वह मसीही लोगों को ''परीक्षा की घड़ी से'' (बचाकर सुरक्षित) करेगा। ''से'' यूनानी उपसर्ग *ek* का अनुवाद है, जिसका अर्थ ''में से'' है। यह उपसर्ग '' *से बचाना,* या ... *से सुरक्षित लाना*'' के लिए हो सकता है।[25] क्या 2:10 में इसका अर्थ ''से बचाना'' है? क्या यीशु ने मसीही लोगों को आश्चर्यकर्म से टीकाकरण किया ताकि वे युद्ध, अकाल और मरी से लड़ सकें? क्या उसने उनके इर्द-गिर्द अदृश्य बाढ़ लगाई, जिससे तलवारें, तीर या कुल्हाड़ियां उनके शरीर पर असर न कर सकें? आप जानते हैं कि उसने ऐसा नहीं किया। परीक्षा खत्म होने से पहले ही, कई मसीहियों ने मर जाना था। (देखें 6:9; 17:6)। इसलिए यीशु की प्रतिज्ञा का अर्थ यही होगा कि वह ''उन्हें परीक्षा से सुरक्षित निकाल'' लेगा।[26]

मसीहियों के रूप में, हमें परीक्षाओं से छूट की प्रतिज्ञा नहीं मिली है, परन्तु हमें उन में से बच निकलने के लिए आत्मिक संसाधनों की प्रतिज्ञा दी गई है (2 कुरिन्थियों 12:9; 2 तीमुथियुस 3:12; 4:18; इब्रानियों 4:16)। यीशु के प्रबन्ध में एक मुख्य बात[27] एक नया व्यवहार[28] अर्थात यह कि किस बात का महत्व है और किसका नहीं पर दृष्टिकोण में

परिवर्तन है। यह व्यवहार निर्दयतापूर्वक सताए गए पौलुस तथा अन्यों के व्यवहार में दिखाई देता था:

> ... हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौ भी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन-प्रतिदिन नाश होता जाता है (2 कुरिन्थियों 4:16)।
>
> ... हम बेधड़क होकर कहते हैं, कि प्रभु, मेरा सहयाजक है; मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है (इब्रानियों 13:6)।
>
> क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है (फिलिप्पियों 1:21)।

यीशु ने फिलाडेल्फिया के मसीहियों से प्रतिज्ञा की कि परीक्षाएं आने पर वह उन्हें नहीं छोड़ेगा। न वह *हमें* ही छोड़ेगा (इब्रानियों 13:5)।

उसके अनुभव के कारण शांति (3:11)

प्रभु का प्रबन्ध कलीसिया की विश्वसनीयता पर निर्भर होना था। यीशु को मालूम था कि मज़बूत बने रहने के लिए उन्हें प्रेरणा देने के लिए किस बात की आवश्यकता थी।

उसकी उपस्थिति का आश्वासन दिया गया

इन मसीहियों को यीशु की उपस्थिति के आश्वासन की आवश्यकता हुई, सो उसने कहा, "मैं शीघ्र ही आने वाला हूं"[29] (आयत 11क)-उन्हें बचाने और उनके शत्रुओं को दण्ड देने के लिए।

उनका धीरज आवश्यक था

उन्हें छोड़कर न जाने के लिए प्रोत्साहित करने की भी आवश्यकता थी, सो उसने उनसे आग्रह किया, "जो कुछ तेरे पास है, उसे थामे रह, कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले"[30] (आयत 11ख)। "मुकुट" वही है, जिसका उल्लेख 2:10 में किया गया है-*stephanos* अर्थात विजय का मुकुट। हर विश्वासी के लिए स्वर्ग में एक मुकुट रखा हुआ है (2 तीमुथियुस 4:8), परन्तु वह मुकुट खो सकता है। उसे रोकने के लिए फिलाडेल्फिया के मसीही लोगों को जो कुछ उनके पास था, उसे पकड़े रखना आवश्यक था।

इन मसीही लोगों के पास थोड़ा था परन्तु जो बात अधिक महत्व की है, वह यह थी कि उनके पास बहुत था: उनके पास उद्धार था, वचन था, प्रभु में उनका विश्वास था और परमेश्वर द्वारा दी गई थोड़ी सामर्थ थी, नये अवसर थे और यीशु की प्रतिज्ञाएं थीं। जो कुछ परमेश्वर ने उन्हें दिया था उसे थामे रखना आवश्यक था और उसे कभी हाथ से निकलने न देना आवश्यक था। पौलुस ने मसीही लोगों के एक समूह को बताया कि सुसमाचार के

द्वारा उनका उद्धार होगा, "*यदि* उस सुसमाचार को जो मैंने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो"[31] (1 कुरिन्थियों 15:2ख)।

उसकी प्रतिज्ञाओं के कारण शांति (3:12)

पत्र में यहां तक, यीशु की प्रतिज्ञाएं मुख्तया जो कुछ उसने *इस* जीवन में विश्वासियों के लिए करना था उसी पर केन्द्रित थीं। समाप्त करने से पहले, उसने उन्हें बताना चाहा कि *आने* वाले जीवन में उसने उनके लिए क्या रखा था:

> जो जय पाए, उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर[32] में एक खम्भा बनाऊंगा; और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा; और मैं अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर, अर्थात नये यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से उतरने वाला है और अपना नया नाम उस पर लिखूंगा (आयत 12)।

प्रमुखता

"खम्भा" के लिए हमें यीशु के हवाले के मूल संकेत मिलते हैं। कुछ इमारतों में खम्भे होते हैं, और आज भी हम "संकट के समय, वह खम्भे की तरह मज़बूत था" या "वह समाज का खम्भा है" जैसे वाक्यों का इस्तेमाल करते हैं। "खम्भा" रूप का इस्तेमाल करते हुए हम उस सहारे या समर्थन की (देखें 1 तीमुथियुस 3:15) या किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की (देखें गलातियों 2:9) बात करते हैं।

नये नियम के समय में "खम्भा" की अवधारणा के अतिरिक्त अर्थ थे। कई बार किसी विशेष व्यक्ति को सम्मान देने के लिए खम्भे बनवाए जाते थे: उन खम्भों पर उन सम्मानित व्यक्तियों की जानकारी के साथ-साथ उनके नाम अंकित किए जाते थे।[33] आज, प्राचीन फिलाडेल्फिया का स्थान प्राचीन थुआतीरा की तरह ही है: उसी जगह पर आधुनिक गांव[34] बना होने के कारण बहुत कम खुदाई का काम हो पाया है। नगर के बीच में केवल एक भाग की ही खुदाई हो पाई है,[35] उस क्षेत्र की विशेषता हमारे अध्ययन के लिए दिलचस्पी का विषय है। वहां पर आज भी कई प्राचीन खम्भे खड़े हैं, जिन पर नायकों के नाम अंकित हैं।

यह कहते हुए कि "उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खम्भा बनाऊंगा" यीशु के मन में यही सब बातें, बल्कि इससे भी अधिक होगा। इस जीवन में, फिलाडेल्फिया के मसीही लोगों को निर्बल समझा जाता था। परन्तु यीशु ने उन्हें "मज़बूत खम्भे" बनाना था।

स्थायित्व

एक महत्वपूर्ण अनुमान *स्थाई* निवास का है, क्योंकि यीशु ने ज़ोर दिया कि "अब वह इससे बाहर नहीं जाएगा।"[36] फिलाडेल्फिया के लोग इमारतों के गिरने से दबने से बचने के लिए नगर से बाहर जाते रहते थे, परन्तु स्वर्ग में, प्रभु के खम्भे पक्के तौर पर लगने थे! स्वर्ग में चले जाने पर परीक्षा का समय समाप्त हो जाएगा। हमारा निवास अन्तरहित युगों अर्थात

सदा के लिए बताया गया है! इस भजनकार की मन की इच्छा अन्त में पूरी हो जाएगी:

> एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है,
> उसी के यत्न में लगा रहूंगा;
> कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं,
> जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं,
> और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं (भजन संहिता 27:4)।

अगस्टिन ने लिखा है, ''किसे ... उस नगर की तड़प नहीं होगी, जिसमें से कोई मित्र निकलता नहीं और जिसमें कोई शत्रु प्रवेश नहीं करता?''[37]

अधिकार

यीशु ने प्रत्येक खम्भे पर ''अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर, अर्थात नये यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से उतरने वाला है और अपना नया नाम'' लिखने की प्रतिज्ञा दी। ये नाम खम्भों को बढ़ाकर ईश्वरीय सम्बन्ध का संकेत देते हैं।[38]

परमेश्वर का नाम हम पर लिखा जाएगा, क्योंकि वह हमारा पिता है, जो हमारी आंखों से हर आंसू पोंछ डालेगा (7:17; 21:4)।

''नया यरूशलेम, जो मेरे परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर उतरने वाला है'' हमारे स्वर्गी निवास का एक और नाम है (देखें 21:2, 10)।[39] (नया यरूशलेम का चित्र देख।) पुराना यरूशलेम 70 ईस्वी में रोमियों द्वारा बीस से अधिक साल पहले नष्ट कर दिया गया था, परन्तु मसीही लोग ''ऊपर की यरूशलेम'' की राह देख सकते हैं (गलातियों 4:26; देखें इब्रानियों 12:22) अर्थात उस अनन्तकालिक नगर की ''जिसका रचने वाला और बनाने वाला परमेश्वर है'' (इब्रानियों 11:10)।[40] ''नये यरूशलेम'' का नाम हम पर उकेरा जाएगा, क्योंकि वह हमारा पक्का पता होगा।

इसके अलावा हमें यीशु का ''नया नाम'' मिलेगा,[41] जैसे दुल्हन को दूल्हे का नाम देकर उसे सम्मानित किया जाता है। मसीही होने के नाते, हम मसीह की दुल्हन अर्थात कलीसिया का भाग हैं (इफिसियों 5:23-33)। एक दिन, वह हमें अपने लिए लेने के लिए आएगा।[42] फिर, ''जब वह प्रकट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है'' (1 यूहन्ना 3:2ख)।

सारांश (3:13)

''जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है'' (आयत 13)।

यह पत्र मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से बहुत महत्वपूर्ण है। इसके शब्दों में मेरे लिए चुनौती है। मुझे परमेश्वर द्वारा दिए गए अवसरों को समझकर उनका लाभ उठाना आवश्यक

है। मुझे उसके वचन की आज्ञा मानने के अपने समर्पण को फिर से नया करने तथा उसका कभी इनकार न करने का निर्णय लेना आवश्यक है। मुझे जो कुछ मेरी ज़िम्मेदारी में सौंपा गया है, उसे थामे रखने के लिए अपनी पकड़ मज़बूत करनी आवश्यक है ताकि मैं अपना मुकुट न खो दूं। विशेषकर यह पत्र मुझे प्रोत्साहित करता है। मैं चाहे कितना भी कमज़ोर क्यों न हूं, एक दिन मैं मज़बूती और स्थिरता का खम्भा बन सकता हूं।

कहते हैं कि हम सभी को एक चिह्न पहनना चाहिए: ''निर्माण कार्य प्रगति पर है।'' यदि मैं उसके निकट रहूं और निराश न होऊं, तो वह मुझ से ही कुछ कराने में सक्षम है![43]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

प्रचारक अक्सर इस पाठ को ''खुले द्वार वाली कलीसिया'' (या केवल ''खुला द्वार'') नाम देते हैं और अवसर, विशेषकर सुसामाचर प्रचार के अवसरों का लाभ उठाने पर ज़ोर देते हैं। इस पत्र को एक-दूसरे से प्रेम रखने की आवश्यकता पर और ज़ोर देते हुए (यूहन्ना 13:34; रोमियों 5:5; 1 थिस्सलुनीकियों 4:9; 1 यूहन्ना 4:19) ''भाइचारे की प्रीति वाली कलीसिया'' नाम दिया जा सकता है: आत्मिक अर्थ में कहें, तो हम सभी को फिलाडेल्फिया अर्थात भाइचारे के प्रेम के नगर में रहना चाहिए।

टिप्पणियां

[1]इस पुस्तक में ''आसिया की सात कलीसियाएं और पतमुस टापू'' वाला मानचित्र देखें। उस क्षेत्र पर वर्तमान जानकारी इस पाठ में दी गई है। [2]अमेरिका में पेनसिलवेनिया में फिलाडेल्फिया नामक नगर है, जिसका मॉटो है ''भाइचारे के प्रेम वाला नगर।'' [3]पूरा इलाका भूकम्पग्रस्त है। जब भी गाइड हमारे यात्री दल को नगर के खण्डहर दिखाता तो वह भूकम्प की उस तिथि का उल्लेख भी करता, जब नगर तबाह हुआ था। [4]होमेर हेली, *रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 149. [5]हमें नहीं मालूम कि यह मण्डली कब बनी थी, हो सकता है कि इफिसुस में पौलुस की सेवकाई के दौरान बनी हो (प्रेरितों 19:1, 8-10)। [6]''खोले'' और ''बन्द'' दोनों ही वर्तमानकाल में हैं, जो निरन्तर क्रिया का संकेत हैं। प्रभु अपनी कलीसिया के जीवन में बना रहता है। [7]''दाऊद की कुंजी'' हमें यशायाह 22:22 में वापस ले चलती है। वहां अच्छे राजा हिजकिय्याह के विश्वासी भण्डारी एल्याकीम को ''दाऊद के घराने की कुंजी'' के रूप में दिखाया गया है, और राजा के सामने आने वालों को प्रवेश की अनुमति देने का अधिकर केवल उसी को था।... राजा के पास जाने के लिए उसके पास से होकर जाना जरूरी था, क्योंकि उसकी उपस्थिति में जाने के लिए द्वार खोलने और बन्द करने का अधिकार केवल उसी को था। (रूबल शैली, *द लैंब एण्ड हिज़ एनिमीज़: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* [नैशविल्ले: टवंटियथ सेंचुरी क्रिश्चियन फाउंडेशन, 1983], 41). [8]''स्वर्ग और पृथ्वी, हर जगह (मत्ती 28:18), 'स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके अधीन हैं' (1 पतरस 3:22), कलीसिया पर (इफिसियों 1:20-22), पृथ्वी के राजाओं पर (प्रकाशितवाक्य 1:5) और मृत्यु और अधोलोक पर (प्रकाशितवाक्य 1:18) यीशु का सम्पूर्ण शासन है'' (हेली,150)। [9]कई बार मुझसे पूछा जाता है कि फलां व्यक्ति का उद्धार होगा या वह नाश हो जाएगा। मैं कहता हूं कि प्रवेश करने देने या न आने देने का अधिकार केवल यीशु के पास है; मैं तो केवल एक प्रचारक हूं, जिसका काम वचन का प्रचार करना है। मैं आम तौर पर

यह ताड़ना देकर बात खत्म करता हूं: ''किसी मनुष्य का विचार पूछने के बजाय, यह पूछें कि उद्धार के बारे में बाइबल क्या कहती है ?'' [10]''मेरे धीरज के वचन'' एक असामान्य वाक्यांश है जिसका अर्थ सम्भवतया ''जो मेरे धीरज को दिखाता है,'' धीरज के मामले में यीशु ने हमारे लिए नमूना छोड़ा है (इब्रानियों 12:2, 3)। उसने धीरज पर प्रचार ही नहीं किया (मत्ती 24:13), बल्कि धीरज करके भी दिखाया।

[11]एल्फ्रैड प्लम्मर, पुलपिट कमैंट्री, अंक 22, *रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 111. [12]देखें यशायाह 40:29; इब्रानियों 11:34. [13]''जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता'' वाक्यांश का अर्थ है कि किसी ने दरवाज़ा बन्द करने की कोशिश करनी थी। 1 कुरिन्थियों 16:9 में पौलुस ने कहा, ''मेरे लिए वहां एक बड़ा और उपयोगी द्वार खुला है, और *विरोधी बहुत से हैं*।'' शैतान सुसमाचार के प्रचार कार्य को आसान नहीं रहने देता। किसी ने ध्यान दिलाया है कि दरवाज़ा खुलने से मक्खी-मच्छर अन्दर आ सकते हैं। [14]''खुला द्वार'' के और सम्भावित अर्थ सुझाए गए हैं, जिनमें सामान्य सेवा के लिए खुले द्वार और विकास के खुले द्वार भी हैं। इसके अलावा, सुझाव दिया गया है कि यीशु के मन में स्वर्ग के आनन्द में जाने का ''खुला द्वार'' (2 पतरस 1:10, 11) या प्रकाशन का ''खुला द्वार'' हो सकता है। [15]अलौकिक शक्ति किसी सौदे से होने वाला अनापेक्षित लाभ है। [16]प्रभु हमें कभी ऐसा खुला द्वार नहीं देता जिसका हम लाभ न उठा सकें। किसी ने कहा है, ''प्रभु जब आज्ञा देता है, तो क्षमता भी देता है।'' [17]पौलुस ने ज़ोर दिया है कि यहूदी ''असल'' वे थे, जिन्होंने यीशु को ग्रहण किया (रोमियों 2:28, 29)। [18]70 ई. में यरूशलेम के विनाश के बाद आराधनालयों में मसीही लोगों का विरोध बढ़ गया। [19]KJV में "worship" है क्योंकि अनुवादित शब्द ''आराधना'' के लिए भी वही यूनानी शब्द है। ASV में "worship" है, परन्तु उसमें यह टिप्पणी जोड़ी गई है: ''यूनानी शब्द भक्ति के कार्य का संकेत देता है, चाहे यह सृष्टि हो या सृष्टिकर्ता की।'' यशायाह ने अन्य जातियों के यहूदियों के सामने झुकने और यह मानने की बात की कि वे सच्चे परमेश्वर की आराधना करते थे (यशायाह 49:23; 60:3, 14)। यीशु ने इस प्रतिज्ञा को घुमाव दे दिया यानी अब मानने की बारी यहूदियों की थी। [20]वे दिखाते हैं कि पत्र के आरम्भ में यीशु की मसीहा सम्बन्धी विशेषताएं बताई गई हैं। वे यह भी ध्यान दिलाते हैं कि प्रकाशितवाक्य लिखने के बीस वर्ष बाद, फिलाडेल्फिया का एक-दूसरे से पत्र व्यवहार इस बात का संकेत था कि मण्डली यहूदी शिक्षा देने वालों के प्रभाव में आई, जो इस बात का संकेत था कि कुछ यहूदी मसीही बन गए थे। ऐसा सोचने वाले लोग ''पीड़ितों और विजय पाने वालों द्वारा एक समान विजय पाने'' की बात कहते हैं।

[21]कई प्रीमिलेनियलिस्ट यह सिखाते हैं कि ''परीक्षा का समय'' यीशु के हज़ार वर्ष के शासन के तुरन्त बाद पृथ्वी पर आने वाले सात वर्ष के क्लेश को कहा गया है। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 41 पर चार्ट देखें।) परन्तु ध्यान दें यह परीक्षा का समय, ''सारे संसार पर आने वाला'' था। यीशु उन्नीस शताब्दियों बाद के क्लेश के समय की नहीं, बल्कि निकट भविष्य की समस्याओं की बात कर रहा था। [22]यह समस्त संसार अर्थात जहां भी लोग हैं, या रोमी साम्राज्य के लिए हो सकता है। प्रकाशितवाक्य में मुख्य ध्यान रोम साम्राज्य पर है। [23]परीक्षा का एक और उद्देश्य उसका वास्तविक स्वभाव बताना है, जिसकी परीक्षा होनी है। इसी प्रकार पश्चात्ताप न करने वालों ने परीक्षा में असफल हो जाना था और परमेश्वर के सचमुच विरोध करने वालों के रूप में सामने आना था। पुराने नियम में ऐसी बात के लिए, व्यवस्था विवरण 4:34; 7:19; 29:2, 3 में ''परीक्षा'' (यानी परख) शब्द देखें। [24]इस बात पर दिए गए बल पर ध्यान दें कि त्रासदी के आने से लोगों ने मन नहीं फिराया (9:20, 21; 16:9, 11)। इससे यह संकेत मिलता है कि यह परमेश्वर की इच्छा थी कि वे मन *फिराएं* (देखें 2 पतरस 3:9)। [25]हैनरी एल्फर्ड, *रैवलेशन,* 152 में हेली द्वारा दोहराया गया। [26]कइयों का मानना है कि उस दिन फिलाडेल्फिया के मसीही कुछ समस्याओं से बच गए। वे कहते हैं कि भूकम्पों के भय के कारण ट्रायन फिलाडेल्फिया से दूर रहा और बड़े नगरों से कम भण्डार होने के कारण जंगली लुटेरों की टोलियां फिलाडेल्फिया के पास से गुज़र जाती थीं। यीशु की प्रतिज्ञा में ये अस्थाई अपवाद हो भी सकते हैं और नहीं भी, परन्तु शेष प्रकाशितवाक्य में यह ज़ोर दिया गया है कि अपने लोगों को दी गई यीशु की *प्राथमिक* सुरक्षा *आत्मिक* है न कि शारीरिक। [27]अन्य बातें भी हैं, जैसे यीशु ने प्रतिज्ञा की कि हमारे सहने से बाहर हमारी परीक्षा न हो (1 कुरिन्थियों 10:13)। [28]1,44,000 पर मुहर की चर्चा (7:3, 4) करने पर

ईश्वरीय सुरक्षा पर और गहराई से विचार किया जाएगा। इस पुस्तक में ''तूफ़ान से ऊपर उठना'' पाठ देखें। [29]''मैं शीघ्र ही आने वाला हूं'' वाक्यांश अस्थाई आने या द्वितीय आगमन, किसी के लिए भी हो सकता है। द्वितीय आगमन को इस अर्थ में ''स्पष्ट'' माना जाता है कि यीशु किसी भी समय आ सकता है (देखें याकूब 5:7, 9; फिलिप्पियों 4:5), परन्तु संदर्भ अस्थाई आने का समर्थन करता है। [30]यीशु ने यह ज़ोर देने के लिए कि मुकुट (अर्थात, उद्धार) खो सकता है, चोर द्वारा धन चुराने का रूपक इस्तेमाल किया। प्रकाशितवाक्य के कई अन्य पदों में यह एक और है, जिसमें विश्वास से त्याग (बेदीनी) की सम्भावना बताई गई है। परन्तु इस बात को समझें कि यह रूपक केवल एक सच्चाई को दर्शाता है। यह, यह नहीं सिखाता कि कोई आपका उद्धार लेकर उसे अनन्तकाल के लिए अपना बना सकता है।

[31]''स्मरण रखते हो'' एक ही यूनानी क्रिया का अनुवाद है, जो कि वर्तमानकाल में है। उन्हें निरन्तर क्रिया का संकेत देते ''स्मरण रखने'' के लिए कहा गया था। [32]''मंदिर'' का अर्थ यहां कलीसिया हो सकता है (जैसे 1 कुरिन्थियों 3:16; इफिसियों 2:21; और प्रकाशितवाक्य 11:1, 2 में है)। यीशु उनकी बात कर रहा था जिन्होंने *अन्तत:* विजयी होना था, इसलिए ''मन्दिर'' सम्भवतया प्रकाशितवाक्य की अधिकांश पुस्तक की तरह स्वर्ग के लिए ही है (देखें 11:19; 14:17)। कुछ लोग आपत्ति करते हैं कि बाद में यहून्ना ने कहा कि उसने स्वर्ग में कोई मन्दिर नहीं देखा (21:22)। याद रखें कि पूरी पुस्तक में रूपक बदल सकते हैं और उनका आपस में मेल खाना इतना महत्वपूर्ण नहीं है। परन्तु यदि आपको लगता है कि 3:12 और 21:22 का मेल खाना आवश्यक है: सारा स्वर्ग परमेश्वर का मन्दिर होगा (जहां हम उसकी आराधना और सेवा करते हैं), जिस कारण यूहन्ना को वहां ''मन्दिर'' नाम का कोई उदाहरण नहीं मिला। [33]आज लगाए जाने वाले स्मृति-चिह्नों से या यादगारों की अन्य किस्मों से तुलना की जा सकती है। [34]इस गांव का नाम अलासहिर है। [35]एक प्राचीन चर्च बिल्डिंग (गिरजाघर) के खण्डहर इस ब्लॉक पर हैं, जो इस बात का स्मरण कराता है कि किसी समय यहां के लोग यीशु के विश्वासी थे, जबकि गली में एक मजिस्द है, जिसमें लोग आते-जाते हैं। [36]यूनानी शास्त्र में दोहरे नकारात्मक इस बात पर दिए जाने वाले ज़ोर को बढ़ा देता है: ''वह बाहर *नहीं* जाएगा, किसी हाल में *नहीं*।'' [37]जेम्स एम. टौलि, *द सैवन चर्चस ऑफ़ एशिया* (पासाडेना, टैक्सस: हाऊन पब्लिशिंग कं., 1968), 69 में उद्धृत। [38]आयत 12 में परमेश्वर को महिमा दी गई है: ''मेरे/अपने परमेश्वर'' वाक्यांश चार बार आता है। [39]''यरूशलेम'' ''स्वर्ग से नीचे आता'' है जिस कारण कइयों ने इसे पृथ्वी पर की कलीसिया कहा है। कइयों ने सुझाव दिया है कि यह ''यीशु के हज़ार वर्ष के राज्य'' की बात है, परन्तु अधिकतर लेखक मानते हैं कि यह स्वर्गीय स्थान में महिमा पाई हुई कलीसिया है और ''स्वर्ग पर से उतरने वाली है'' वाक्यांश केवल इस बात पर ज़ोर देता है कि यह हमारे लिए परमेश्वर का प्रबन्ध है। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 5'' में ''सब कुछ नया'' पाठ में 21:2 पर टिप्पणियों देखें। [40]देखें इब्रानियों 13:14.

[41]यह सम्भवतया 2:17 में बताया गया ''नया नाम'' ही है। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में इस आयत पर टिप्पणियां देखें। ''नया नाम'' का विचार फिलाडेल्फिया के लोगों के लिए विशेष होगा, क्योंकि वर्षों से उस नगर को कई नाम दिए जाते थे। [42]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 5'' में ''मेमने के विवाह का पर्व'' पाठ देखें। [43]आप इसे अपने ऊपर और सुनने वालों पर लागू करें। यदि वे मसीही नहीं हैं तो उनसे सुसमाचार की आज्ञा मानने का आग्रह करें (प्रेरितों 2:36-38)।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. सातों में से कौन सी कलीसिया सबसे अच्छी थी? सबसे बुरी कौन सी थी? (अगला पाठ देखें।)
2. ''फिलाडेल्फिया'' नाम का क्या अर्थ है?
3. अतलुस ने फिलाडेल्फिया क्यों बसाया? वहां पर कलीसिया के लिए प्रभु के उद्देश्य का इससे क्या सम्बन्ध है?

4. फिलाडेल्फिया की भूगर्भीय समस्या क्या थी ? क्या यह समस्या पत्र के अन्त के निकट समस्याओं में दिखाई दी ?
5. नये नियम में ''खुला द्वार'' रूपक का क्या अर्थ है ?
6. क्या ''थोड़ी सामर्थ'' अपमान करने के लिए थी या शाबाशी देने के लिए ?
7. ''शैतान की सभा'' क्या थी ?
8. किस अर्थ में यहूदी लोगों ने मसीही लोगों के कदमों में ''झुकना'' था ?
9. ''पूरी पृथ्वी पर आने वाला परीक्षा का समय'' क्या था ?
10. जब यीशु ने कहा कि वह उन्हें ''परीक्षा के समय से'' बचाएगा, तो क्या उसके कहने का अर्थ यह था कि मसीही लोगों पर परीक्षाएं नहीं आएंगी ?
11. प्रकाशितवाक्य में, ''पृथ्वी पर रहने वाले'' कौन हैं ?
12. 3:12 में ''खम्भा'' शब्द के कुछ अर्थ क्या हैं ?
13. नये नियम के समय में खम्भों पर नाम क्यों लिखे जाते थे ?
14. ''नया यरूशलेम'' क्या है ?
15. क्या आपको इस पाठ में कुछ ऐसा मिला, जिसने आपको चुनौती दी या आपको सांत्वना दी ?

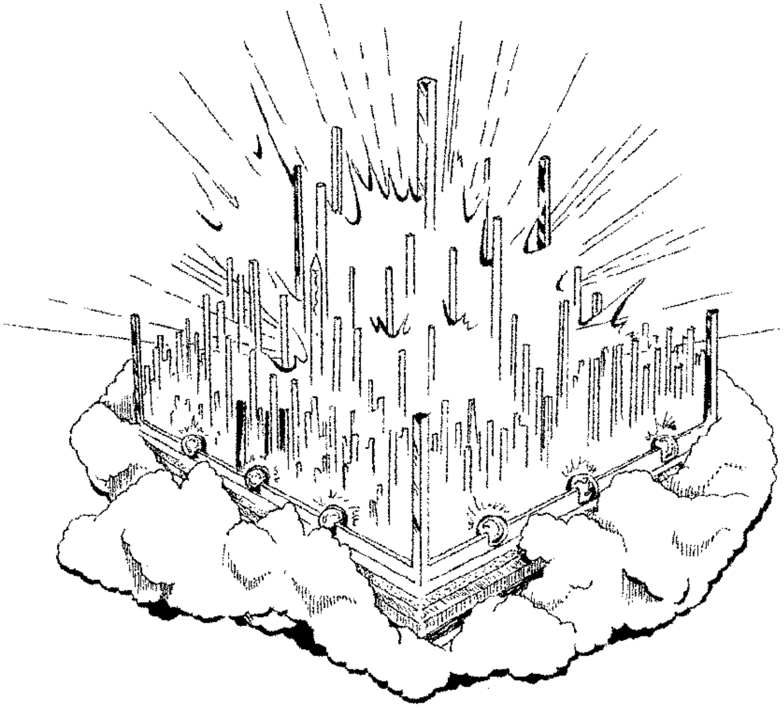

नया यरूशलेम (21:2, 10)